CONTENTS

INDEX

TITLE	Page(s)
भारत में नई शिक्षा नीति- **2020,** शिक्षक शिक्षा में समस्याओं और समाधानों पर अध्ययन - **डॉ. कंचन जैन**	**02**
Importance of "Machine learning" - **Ankit Kaushik**	**17**
निराला के निबंधों में नवजागरण के प्रभाव पर अध्ययन - **अंजू लता जैन**	**25**
Challenges in Teachers Education and Teaching – **Prof.(Dr.) Raghavevndra Dwivedi, Dr. Manisha Dwivedi**	**33**
Globalization, Culture, and Teacher Education – **Rakesh Kumar Keshari, Dr. Shivpal Singh**	**43**

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
Vol: 9, ISSUE: 1, No: 33 July-September, 2023

निराला के निबंधों में नवजागरण के प्रभाव पर अध्ययन

अंजू लता जैन
(हिन्दी विभाग)
संचालिका
मां सरस्वती प्रशिक्षण केंद्र

सार

निराला" (शाब्दिक रूप से "अनोखा) सूर्यकांत त्रिपाठी (1899-1961) का उपनाम था, जो समकालीन हिंदी कविता में पहले प्रमुख "आंदोलन" छायावाद से जुड़े बीसवीं सदी के चार प्रमुख हिंदी कवियों में से एक थे। कई पश्चिमी और भारतीय दोनों आलोचकों ने छायावाद की पश्चिमी स्वच्छंदतावाद के साथ समानता पर जोर दिया है, जिसका मुख्य कारण इसकी व्यक्तिगत चेतना और व्यक्तिपरकता में व्यस्तता है। आंदोलन की सबसे अधिक बार-बार होने वाली आलोचनाओं में से एक यह है कि इसमें केंद्रीय राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों के प्रति चिंता का अभाव है। इसका युग, बीस और तीस का दशक। हालांकि यह सामान्य रूप से सच हो सकता है, यह कम से कम कुछ छायावाद कविता के साथ पूर्ण न्याय नहीं करता है। यहां यह तर्क दिया जाएगा कि, विशेष रूप से, निराला की कविता आश्चर्यजनक रूप से विवादास्पद है,"यह-सांसारिक' और भाषा चेतना, राष्ट्रीय पहचान और लिंग निर्माण जैसे मुद्दों से जुड़ा हुआ है। निराला की कई कविताओं का अनुवाद डेविड रुबिन द्वारा किया गया था , और वे संग्रह में उपलब्ध हैं, ए सीज़न ऑन द अर्थ: सेलेक्टेड पोयम्स ऑफ निराला (कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1977), द रिटर्न ऑफ सरस्वती: फोर हिंदी पोएट्स (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993) , और ऑफ़ लव एंड वॉर: ए छायावाद एंथोलॉजी (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005)।निराला आत्महंता आस्था दूधनाथ सिंह द्वारा लिखित उनकी रचनाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण था ।

मुख्य शब्द - नवजागरण, लेखन शैली, त्रासदी, साहित्यिक, विषय वस्तु, कृतियां।

प्रस्तावना

निराला जन्मजात प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। मैट्रिकुलेशन के बाद उन्होंने अपने शुरुआती दिनों में कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली। लेकिन अपनी स्वाभाविक बुद्धि से उन्होंने संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी साहित्य में बहुत बड़ा ज्ञान प्राप्त किया।'निराला' ने 12 काव्य संग्रह लिखे। इसके अलावा उन्होंने छह उपन्यास, कई लघु कथाएँ, निबंध और आलोचनाएँ लिखीं। वह भारतीय पुनर्जागरण से बेहद प्रेरित थे, जो बंगाल में फला-फूला और आधुनिक युग में नई कविता लाने की कोशिश की। उन्होंने चित्रकला में भी अपनी पहचान बनाई। उन्होंने कई रेखाचित्र बनाये। उन्होंने कई प्रसिद्ध बांग्ला साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया। 15 अक्टूबर 1961 को इलाहाबाद में उनका निधन हो गया । निराला' पर मानों दुर्भाग्य का बोझ था और उनका जीवन त्रासदियों से भरा था। कम उम्र में ही उनकी मां की मृत्यु हो गई। वह लखनऊ के गढ़ाकोला चले गएजहां उनके पिता मूल रूप से थे। उन्होंने बहुत कम उम्र में अनोहर देवी से शादी की लेकिन जब वह केवल 20 वर्ष के थे, तब उनकी मृत्यु हो गई। कुछ वर्षों के बाद उनकी इकलौती बेटी की मृत्यु हो गई जो विधवा थी। त्रिपाठी को गहरे आर्थिक संकट का भी सामना करना पड़ा। जब वे बंगाल में थे तो वे रामकृष्ण परमहंस , स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर से बहुत प्रभावित थे. शादी के बाद उनकी पत्नी ने उन पर हिंदी सीखने का दबाव डाला। हिंदी सीखते हुए उन्होंने बांग्ला के बजाय हिंदी भाषा में लिखना शुरू कर दिया। वह अपनी विषयवस्तु और लेखन शैली दोनों में बहुत विद्रोही थे। वह सामाजिक प्रतिष्ठान और सत्ता के भ्रष्टाचार के खिलाफ दृढ़ता से खड़े रहे। उन्होंने लेखन के माध्यम से सामाजिक अन्याय और शोषण का विरोध किया। इसके लिए उन्हें कई आलोचनाएं भी सहनी पड़ीं. अपने जीवन के अंतिम समय में वे सिज़ोफ्रेनिया के शिकार थे। एक आवर्ती पहलू उनकी अत्यधिक यादृच्छिक परोपकारिता थी, विशेष रूप से उल्लेखनीय यह देखते हुए कि वह स्वयं कथित तौर पर दरिद्र थे और एक पहचानने योग्य चंचल स्वभाव के थे।

शोध प्रविधि - निराला के निबंधों का अध्ययन।

शोध उद्देश्य - निराला के निबंधों में नवजागरण के प्रभावों का पता लगाना।

निराला के निबंधों का नवजागरण पर प्रभाव

निराला प्रारम्भ से ही पटु निबन्धकार है । आज तक निरालाजी के तीन निबन्ध - संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं-

निराला का 1 पद्म 2. प्रबन्ध प्रतिमा 3. चाबुक समीक्षात्मक कृति रवीन्द्र कविता कानन ' भी समय - समय पर लिखे गये लेखों का चौथा संकलन है।निबंधों का उपयोग साहित्यिक आलोचना,राजनीतिक घोषणापत्र ,सीखे गए तर्क, दैनिक जीवन के अवलोकन, यादें और लेखक के प्रतिबिंब के रूप में किया जाता है। लगभग सभी निबंध गद्य में लिखे गए हैं ।

निबंध का अर्थ उद्देश्य, तथ्यात्मक और ठोस विशेष जोकि निबंधकार इस ध्रुव से लिखते हैं वे "सीधे अपने बारे में बात नहीं करते हैं, बल्कि अपना ध्यान किसी साहित्यिक या वैज्ञानिक या राजनीतिक विषय पर केंद्रित करते हैं। उनकी कला में सामने रखना, निर्णय पारित करना शामिल है, और प्रासंगिक वाक्यों से सामान्य निष्कर्ष निकालना"। निराला के प्रसिद्ध निबंध

- (*रविन्द्र-कविता-कन्नन*)
- (*प्रबंध पद्य*)
- (*प्रबंध प्रतिमा*)
- (*चाबुक*)
- (*चयन*)
- (*संग्रह*)

अर्थ अर्थान्तर ' नामक निबन्ध निरालाजी के अगाध पाण्डित्य का परिचायक है । ' बंग भाषा का उच्चारण ' और ' महाकवि रवीन्द्र की कविता ' नामक दो लेख निरालाजी की बंगभाषा के प्रति तथा उसके महानतम कवि के प्रति जो निष्ठा एवं आदर है , उसका दिग्दर्शन कराने में समर्थ हैं । ' ज्ञान और भक्ति पर तुलसीदास ' नामक टिप्पणी सामयिक सुझाव था । तुलसी दासजी के निरालाजी प्रशंसक हैं । ' रामायण ' के ही माध्यम से हिन्दी का ज्ञान सीखने का सौभाग्य उन्हें अपनी पत्नी मनोहरा द्वारा प्राप्त हुआ था । यही कारण है कि सन् 1920 में लिखी इस टिप्पणी में भी वे तुलसीदास जी द्वारा वर्णित भक्ति एवं ज्ञान की एकात्मकता पर विचार करते हैं । सन् 1947 में निरालाजी ने तुलसीकृत ' विनयखण्ड ' (रामायण) का खड़ी बोली में अनुवाद भी प्रस्तुत किया है । ' शक्ति परिचय ' नामक निबन्ध उनके वेदान्तवादी दृष्टिकोण का परिचायक है । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सम्बन्धी लेख सुना हुआ संस्मरण मात्र है ।

' देशद्त ' आदि पत्र - पत्रिकाओं से निरालाजी के अट्ठारह लेख निकालकर उनके पास पहुँचा तो उन्होंने हतोत्साहित करते हुए कहा , ' अपना बहुमूल्य समय इस प्रकार क्यों गँवाया ? ' किन्तु दूसरे ही क्षण , जब मैंने उन लेखों के संग्रह के लिए एक नाम पूछा , उन्होंने हँसते हुए कहा , ' चयन ' या ' चयनिका में जो भी तुम्हें जँचे , नामकरण कर लो । "

' चयन ' निराला के उन तमाम लेखों एवं समालोचनाओं का संग्रह है जो सन् 1920 से सन् 1956 तक उनकी कलम से विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के लिए समय - समय पर लिखे गये थे । किन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि उन तमाम लेखों को मैंने पा लिया है जो निरालाजी ने लिखे थे । सम्भवतः अब भी कुछ रचनाएँ शेष रह जावें । यदि कोई भी सज्जन मुझे उनकी जानकारी देंगे तो मैं उनको पुनः संग्रहीत करने का प्रयत्न करूँगा और उन सज्जनों का आभारी रहूँगा ।

जिन 18 निबन्धों एवं पुस्तक परिचयों को ' चयन में संकलित किया है , उनमें से कतिपय निबन्धों पर ही यहाँ विचार किया जा रहा है । पाठकों को निरालाजी के नवीन आलोचनामय दृष्टिकोण को

दिखाना । ' चाबुक ' में ऐसे अनेक परिचय हैं । सम्पादक होने के नाते निरालाजी को लेखकों द्वारा प्रेषित समालोचनार्थ पुस्तकों के विषय में कुछ - न - कुछ अवश्य लिखना पड़ता था । वे इस कार्य को बड़ी ही तत्परता एवं निष्पक्षतापूर्वक सम्पादित करते थे । पाठकों को समालोचित पुस्तकों से तद्विषयक जानकारी प्राप्त हो सकेगी । निराला की 'परिमल', 'गीतिका', 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'अपरा', 'बेला', 'नये पत्ते', 'आराधना', 'अर्चना' आदि। गद्य रचनाओं मे 'लिली', "चतुरी-चमार', 'अलका', 'प्रभावती', 'अप्सरा', तथा 'निरुपमा' आदि उनकी श्रेष्ठ गद्य-रचनाएँ हैं।

आर्थिक संकट का काल

सन् 1927-30 ई० तक निराला लगातार अस्वस्थ रहे । उसके बाद निराला जी ने स्वेच्छा से गंगा पुस्तक माला का सम्पादन तथा ' सुधा ' में सम्पादकीय का लेखन करने में तत्पर रहें । सन् 1930 से 1942 तक निराला का अधिकांश समय लखनऊ में ही व्यतीत हुआ । इस समय निराला घोर आर्थिक संकट से जूझ रहे थे। जीवकोपार्जन के लिए निराला जी को जनता के लिए लिखना पड़ता था । जनरुचि कथा साहित्य के अधिक अनुकूल होती है । उनके कहानी संग्रह ' लिली ' , ' चतुरी चमार ' , ' सुकुल की बीबी (1941 ई) और सखी की कहानियों तथा ' अप्सरा ' , ' अलका ' , ' प्रभावती (1946 ई) ' निरुपमा ' इत्यादि उपन्यास उनके आर्थिक संकट के फलस्वरूप प्रणीत हुए । निराला जी के लेखों का संग्रह ' प्रबन्ध पद्म ' के नाम से इसी समय में प्रकाशित हुआ । इसका इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वे जनरुचि के कारण अपने अम्बर से उतर कर सामान्य भूमि पर आ गये उनके काव्यगत प्रयोग चलते रहे । सन् 1936 ई . में स्वरताल युक्त उनके गीतों का संग्रह ' गीतिका ' नाम से प्रकाशित हुआ तथा दो वर्ष के बाद अर्थात सन् 1938 ई . में उनका ' अनामिका ' काव्य संग्रह प्रकाश में आया । यह संग्रह सन् 1922 ई . में प्रकाशित ' अनामिका ' संग्रह से बिल्कुल भिन्न है । सन् 1938 ई . ही उनके अंतमुख प्रबन्ध काव्य ' तुलसीदास ' का भी प्रकाशन हुआ ।

निराला और निबंध

निराला के पाँच निबन्ध - भाषा की गति और हिन्दी की शैली , ' साहित्य की समतल भूमि , हिन्दी कविता साहित्य की प्रगति ' खड़ी बोली के कवि और कविता ' तथा ' काव्य साहित्य ' विशिष्ट कोटि के हैं । उनके द्वारा नवोदित कवि ने अपने मनोभावों को जिस परिपक्वता के साथ प्रकट किया है , वह हिन्दी साहित्य की आलोचना - पद्धति तथा इतिहास - लेखन - कला में एक नवीन अध्याय जोड़ने में समर्थ है । प्राणों की पावनता के दर्शन यदि कहीं हमें होते हैं तो निरालाजी के गद्य में । उन्होंने सन् 1923 से 1930 की कालावधि में जो चिन्तन एवं मनन किया है , राष्ट्र भाषा के स्वरूप का जो स्वप्न देखा है और जो भविष्यवाणियाँ की हैं , वे आज अक्षरशः सत्य घटित होती दिखायी पड़ती हैं । अपने काल के लेखकों में सम्भवतया निरालाजी ही एक ऐसे लेखक हैं जिन्होंने हिन्दी के राष्ट्रभाषा पद पर आसीन होने के साकार स्वप्न देखे थे । उसके लिए उन्होंने गद्य एवं पद्य में प्रचुर साहित्य का सृजन भी किया था ।

उपसंहार

निराला हिन्दी में निबंध लेखन एवं चन्दो के लिये प्रसिद्ध हैं । निराला में प्रारंभ से ही छायावाद से साथ साथ सरलतम शब्दों और बोलचाल की भाषा में जीवन के विषय को अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति निराला के निबंधों में देखी जा सकती है । निराला स्थितियों का संश्लेषण करके कम से कम शब्दों द्वारा अधिक से अधिक भाव पक्ष प्रकट करने की प्रतिभा से परिपूर्ण थे । इसी कारण से निराला की कविताओं में कभी कभी दुरुहता आ जाती है । निराला को ही यह महत्व प्राप्त हैं कि वह नई हिन्दी कविताओं की सभी प्रवृत्तियों के कवि अपना संबंध निराला से जोड़ने में गौरवशाली अनुभव करते हैं । उनकी अधिकांश रचनाओं में भाषा तत्सम बहुल देखी गई है तथा उनमें समासों की अधिकता भी है ।

सन्दर्भ

- निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृ०-39-40.
- निराला रचनावली, खण्ड-1, सं॰-नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-1998, पृ०-19.
- निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृ०-60-61 तथा पृ०-440-441.
- निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृ॰-42.
- निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृ॰-20.
- निराला रचनावली, खण्ड-5, पूर्ववत्, पृ॰-14.
- निराला रचनावली, खण्ड-7, पूर्ववत्, पृ॰-15.
- निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृष्ठ-16.
- महिषादल राज कॉलेज" । कॉलेज प्रवेश . 9 अप्रैल 2019 को लिया गया ।
- घोष, अविजीत (27 मार्च 2020)। "कैसे साहित्य ने हमें महामारी को समझने में मदद की है" । *टाइम्स ऑफ इंडिया* । 19 फरवरी 2022 को लिया गया ।
- चिश्ती, सीमा (12 अप्रैल 2020)। "हिन्दी साहित्य में मृत्यु और बीमारी के सन्दर्भ" । *इंडियन एक्सप्रेस* । 19 फरवरी 2022 को लिया गया ।
- रवीन्द्र कविता कानून (परिवर्धित संस्करण) हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस , 1954

- गंगा पुस्तकमाला कार्यालय , लखनऊ , 1934
- प्रबन्ध पद्म प्रबन्ध प्रतिमा -भारती भण्डार , प्रयाग , 1940
- चाबुक -कला मंदिर , इलाहबाद , 1942

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522